भारत सरकार

आयुष मंत्रालय

लोक सभा

अतारांकित प्रश्न सं. 1645

16 दिसम्बर, 2022 को पूछे जाने वाले प्रश्न का उत्तर

औषधीय पौधों की खेती

1645. श्री कुलदीप राय शर्मा:
डॉ. डी.एन.वी. सेंथिलकुमार एस.:
श्री सुनील दत्तात्रेय तटकरे:
डॉ. सुभाष रामराव भामरे:
श्रीमती सुप्रिया सदानंद सुले:
डॉ. अमोल रामसिंह कोल्हे:

क्या आयुष मंत्री यह बताने की कृपा करेंगे कि:

(क) सरकार द्वारा देश में औषधीय पौधों की खेती को बढ़ावा देने के लिए राष्ट्रीय आयुष मिशन (एनएएम) के कार्यान्वयन के तहत क्या उपलब्धि हासिल की गई है;

(ख) क्या सरकार औषधीय पौधों के संरक्षण, विकास और सतत् प्रबंधन पर योजना लागू कर रही है और यदि हां, तो तत्संबंधी ब्यौरा क्या है और इसमें किन-किन कार्यकलापों को समर्थन दिया गया/क्या सफलता प्राप्त हुई है;

(ग) क्या केंद्र सरकार को औषधीय पौधों की खेती को बढ़ावा देने और समर्थन देने के लिए क्षेत्रीय केंद्र स्थापित करने हेतु महाराष्ट्र और तमिलनाडु राज्य सरकार से कोई प्रस्ताव प्राप्त हुआ है;

(घ) यदि हां, तो तत्संबंधी ब्यौरा क्या है और उस पर राज्य-वार क्या कार्रवाई की गई है;

(ङ) क्या सरकार उक्त राज्यों में औषधीय पौधों की खेती को बढ़ावा देती है और यदि हां, तो उक्त राज्यों में उत्पादित औषधीय पौधों और जड़ी-बूटियों की मात्रा कितनी है और तत्संबंधी ब्यौरा क्या है; और

(च) सरकार द्वारा देश में किसानों के बीच औषधीय पौधों की खेती को बढ़ावा देने के लिए और साथ ही उक्त प्रयोजनार्थ खेती समूहों के विकास को प्रोत्साहित करने के लिए क्या कदम उठाए गए हैं/उठाए जा रहे हैं?

<u>उत्तर</u>

आयुष मंत्री (श्री सर्बानंद सोणोवाल)

(क): आयुष मंत्रालय, भारत सरकार ने औषधीय पादपों की खेती को बढ़ावा देने के लिए वित्तीय वर्ष 2015-16 से 2020-21 तक राष्ट्रीय आयुष मिशन (एनएएम) की केंद्रीय प्रायोजित योजना कार्यान्वित की थी। इसके 'औषधीय पादप' घटक के तहत, चिन्हित समूहों/अंचलों में 140 प्राथमिकता प्राप्त औषधीय पादपों की बाजार संचालित खेती को देश भर में चयनित राज्य कार्यान्वयन एजेंसियों के माध्यम से मिशन मोड में

कार्यान्वित और समर्थन किया गया। स्कीम के दिशा-निर्देशों के अनुसार, निम्नलिखित के लिए सहायता प्रदान की गई:

(i) किसान की भूमि पर प्राथमिकता प्राप्त औषधीय पादपों की खेती।

(ii) गुणवत्तायुक्त रोपण सामग्री उगाने और उसकी आपूर्ति करने के लिए पश्चवर्ती सम्बद्धता के साथ पौधशालाओं की स्थापना।

(iii) अग्रवर्ती सम्बद्धता के साथ फसलोपरांत प्रबंधन।

(iv) प्राथमिक प्रसंस्करण, विपणन अवसंरचना इत्यादि।

आयुष मंत्रालय ने राष्ट्रीय आयुष मिशन (एनएएम) के औषधीय पादप घटक के तहत वित्तीय वर्ष 2015-16 से 2020-21 तक 56,305 हेक्टेयर क्षेत्र, 220 पौधशालाओं, 354 फसलोपरांत प्रबंधन इकाइयों आदि का समर्थन किया था। औषधीय पादप घटक के लिए एनएएम स्कीम के अंतर्गत समर्थित कार्यकलापों का ब्यौरा **संलग्नक-I** में दिया गया है।

(ख): जी हां। राष्ट्रीय औषधीय पादप बोर्ड, आयुष मंत्रालय "औषधीय पादप संरक्षण, विकास और सतत प्रबंधन के लिए केंद्रीय क्षेत्र योजना" नामक स्कीम का कार्यान्वयन कर रहा है। इस स्कीम के तहत, औषधीय पादपों पर निम्नलिखित क्रियाकलापों के लिए परियोजना आधारित सहायता प्रदान की जाती है:

(i) औषधीय पादप संरक्षण और विकास क्षेत्र (एमपीसीडीए) और संसाधन संवर्द्धन के माध्यम से सर्वेक्षण सूचीकरण, स्व-स्थाने संरक्षण

(ii) जड़ी-बूटी उद्यान (एचजी), विद्यालय जड़ी-बूटी उद्यान (एसएचजी) और गृह जड़ी-बूटी उद्यान (एचएचजी) का बाह्य-स्थाने संरक्षण/स्थापना

(iii) संयुक्त वन प्रबंधन समितियों/ पंचायतों/ वन पंचायतों/ जैव विविधता प्रबंधन समितियों/ स्वयं सहायता समूहों को औषधीय पादपों के सुखाने, प्राथमिक प्रसंस्करण, भंडारण आदि जैसे मूल्य संवर्धन क्रियाकलापों के लिए समर्थन और इस प्रकार, तत्संबंधी समुदायों के लिए आजीविका का सृजन करना।

(iv) अनुसंधान एवं विकास

(v) सूचना, शिक्षा और संचार (आईईसी) आदि।

अब तक, एनएमपीबी, आयुष मंत्रालय ने इसकी स्थापना के बाद से औषधीय पादपों के संरक्षण, विकास और सतत प्रबंधन की केंद्रीय क्षेत्रक योजना के अंतर्गत पूरे देश में 1497 परियोजनाओं का समर्थन किया है। इसी योजना के तहत, एनएमपीबी, आयुष मंत्रालय ने स्व-स्थाने/ बाह्य-स्थाने संरक्षण और संसाधन वृद्धि के तहत 82436.87 हेक्टेयर क्षेत्र, 24,000 जड़ी-बूटी उद्यानों, 1175 जेएफएमजी, 233 संगोष्ठियों/ कार्यशालाओं/ सम्मेलनों/ क्रेता-विक्रेता बैठकों/ प्रशिक्षण कार्यक्रमों और 57 पौधशालाओं के लिए समर्थन किया है। इसके अतिरिक्त, एनएमपीबी ने औषधीय पादपों के व्यापार के लिए मंच प्रदान करने और आसान बाजार पहुंच प्रदान करने के लिए "ई-चरक" नामक ऐप विकसित किया है और सीडीएसी हैदराबाद के सहयोग से एनएमपीबी हेल्पलाइन विकसित की गई। औषधीय पादपों का संरक्षण, विकास और सतत प्रबंधन के लिए केंद्रीय क्षेत्र योजना के अंतर्गत समर्थित क्रियाकलापों और उपलब्धियों का ब्यौरा **संलग्नक**-II में दिया गया है।

(ग) और (घ): जी हां। राष्ट्रीय औषधीय पादप बोर्ड (एनएमपीबी), आयुष मंत्रालय की औषधीय पादपों के संरक्षण, विकास और सतत प्रबंधन पर केंद्रीय क्षेत्र योजना के अंतर्गत परियोजना मोड में मौजूदा सरकारी

संस्थान में क्षेत्रीय-सह-सुविधा केंद्र (आरसीएफसी) की स्थापना करने का प्रावधान है। आरसीएफसी के मुख्य क्रियाकलाप उनके क्षेत्र में विभिन्न राज्यों में विभिन्न कार्यान्वयन एजेंसियों के साथ समन्वय करना, किसानों/औषधीय पादपों के संग्रहकर्ताओं को प्रशिक्षण देना, औषधीय पादपों की गुणवत्तायुक्त रोपण सामग्री (क्यूपीएम) का विकास करना है।

दिशानिर्देशों के प्रावधान के अनुसार, कुल 7 क्षेत्रीय-सह-सुविधा केंद्रों (आरसीएफसी) की पहचान की गई है और राष्ट्रीय औषधीय पादप बोर्ड, आयुष मंत्रालय द्वारा गठित समिति के माध्यम से खुले विज्ञापन और चयन के जरिए देश के विभिन्न क्षेत्रों में उन्हें स्थापित किया गया है। क्षेत्रीय-सह-सुविधा केंद्र की स्थापना के लिए महाराष्ट्र और तमिलनाडु राज्य से प्राप्त प्रस्तावों का ब्यौरा और उन पर की गई कार्रवाई का विवरण नीचे दिया गया है:

क्र.सं.	**राज्य**	**कहां से प्रस्ताव प्राप्त**	**कृत कार्रवाई**
1.	महाराष्ट्र	सावित्रीबाई फुले पुणे विश्वविद्यालय, महाराष्ट्र	पश्चिमी क्षेत्र में आरसीएफसी की स्थापना के लिए प्रस्ताव पर विचार किया गया और अनुमोदित किया गया।
		गोंड़वाना विश्वविद्यालय, महाराष्ट्र	आरसीएफसी की स्थापना के लिए प्रस्ताव पर विचार किया गया परंतु अनुमोदन नहीं हुआ।
2.	तमिलनाडु	कोई प्रस्ताव प्राप्त नहीं हुआ	-

(ड.): जी हां। पूर्व में, आयुष मंत्रालय, भारत सरकार ने राष्ट्रीय आयुष मिशन (एनएएम) की केंद्रीय प्रायोजित योजना के औषधीय पादप घटक के तहत महाराष्ट्र और तमिलनाडु सहित पूरे देश में वित्तीय वर्ष 2015-16 से 2020-21 तक औषधीय पादपों की खेती को बढ़ावा और समर्थन किया था। इसी घटक के तहत, राज्य कार्यान्वयन एजेंसियों के माध्यम से किसानों को 140 प्राथमिकता प्राप्त औषधीय पादपों की प्रजातियों की खेती के लिए खेती लागत की 30%, 50% और 75% की दर से सब्सिडी प्रदान की गई। अब तक, आयुष मंत्रालय ने वित्तीय वर्ष 2015-16 से 2020-21 तक महाराष्ट्र और तमिलनाडु सहित पूरे देश में औषधीय पादपों की खेती के तहत 56,305 हेक्टेयर क्षेत्र का समर्थन किया है। इसका ब्यौरा निम्नलिखित है:

वित्तीय वर्ष	**महाराष्ट्र (क्षेत्रफल हेक्टेयर में)**	**तमिलनाडु (क्षेत्रफल हेक्टेयर में)**
2015-16	327	633
2016-17	0	960
2017-18	444	673
2018-19	0	765
2019-20	520	900
2020-21	0	0
कुल	**1291**	**3931**

(च): "औषधीय पादप संरक्षण, विकास और सतत प्रबंधन पर केंद्रीय क्षेत्र योजना" के तहत, सूचना, शिक्षा और संचार (आईईसी) कार्यकलापों (प्रशिक्षण कार्यक्रम, क्रेता-विक्रेता बैठकें, कार्यशालाओं, संगोष्ठियों,

सम्मेलन आदि) और किसानों के बीच औषधीय पादपों की खेती को बढ़ावा देने के लिए पौधशालाओं और क्षेत्रीय-सह-सुविधा केंद्रों की स्थापना करने हेतु समर्थन करने का प्रावधान है।

राष्ट्रीय औषधीय पादप बोर्ड (एनएमपीबी) ने इसकी स्थापना के बाद से औषधीय पादपों के बारे में स्थानीय समुदाय को जागरूक करने के लिए सूचना शिक्षा और संचार (आईईसी) क्रियाकलापों के तहत 233 परियोजनाओं का समर्थन किया है, औषधीय पादपों के विपणन के तहत 18 परियोजनाओं, गुणवत्तायुक्त पादप सामग्री उगाने के लिए पौधशालाओं की स्थापना के लिए 57 परियोजनाओं का समर्थन किया है।

इसके अतिरिक्त, राष्ट्रीय औषधीय पादप बोर्ड, आयुष मंत्रालय अपने क्षेत्रीय-सह-सुविधा केंद्रों (आरसीएफसी) के माध्यम से विभिन्न राज्यों में औषधीय पादपों और जड़ी-बूटियों की गुणवत्तापूर्ण रोपण सामग्री के विकास के लिए किसानों/अन्य हितधारकों को वित्तीय और तकनीकी सहायता भी प्रदान कर रहा है। स्कीम के दिशानिर्देशों के प्रावधान के अनुसार, एनएमपीबी ने देश के विभिन्न फाइटो-भौगोलिक स्थानों/क्षेत्रों में विभिन्न औषधीय पादपों की क्रियाकलापों को बढ़ावा देने के लिए परियोजना मोड में 7 क्षेत्रीय-सह-सुविधा केंद्र (आरसीएफसी) स्थापित किए हैं।

इसके अतिरिक्त, आयुष मंत्रालय, भारत सरकार ने राष्ट्रीय आयुष मिशन (एनएएम) की केंद्रीय प्रायोजित योजना के तहत वित्तीय वर्ष 2015-16 से 2020-21 तक पूरे देश में औषधीय पादपों की खेती को बढ़ावा दिया था। आयुष मंत्रालय ने राष्ट्रीय आयुष मिशन योजना के औषधीय पादपों के घटक के तहत वित्तीय वर्ष 2015-16 से 2020-21 तक देश में 19061 किसानों के लिए आईईसी क्रियाकलापों और प्रशिक्षण के तहत 235 कार्यशालाओं/क्रेता-विक्रेता बैठक/अनुभव दौरों का समर्थन किया था। इसमें 15 किमी के दायरे में औषधीय पादपों की खेती के लिए न्यूनतम 2 हेक्टेयर भूमि वाले किसानों का समूह बनाने का भी प्रावधान था।

*****

संलग्नक-I

आयुष मंत्रालय की "राष्ट्रीय आयुष मिशन" (एनएएम) योजना के औषधीय पादप घटक के अंतर्गत वित्तीय वर्ष 2015-16 से 2020-21 तक समर्थित कार्यकलापों का ब्यौरा

(धनराशि लाख रूपये में)

क्र.सं.	समर्थित कार्यकलाप	2015-16	2016-17	2017-18	2018-19	2019-20	2020-21	कुल
1	औषधीय पादपों की खेती (क्षेत्रफल हेक्टेयर में)	8722	12109	10366	9958	6794	8356	**56305**
2	खेती का रखरखाव	2031	164	163	176	130	10	**2673**
3	पौधशालाओं की स्थापना	32	39	38	38	50	23	**220**
4	फसलोपरांत प्रबंधन	62	48	66	52	99	27	**354**
5	प्रसंस्करण इकाई	1	2	3	1	16	2	**25**
6	ग्रामीण/जिला संग्रहण केंद्र/खुदरा दुकान	0	11	9	17	2	3	**42**
7	बीज जर्मप्लाज्म केंद्र	0	3	5	0	1	1	**10**
8	प्रदर्शन स्थल	0	2	2	2	6	3	**15**

संलग्नक-II

औषधीय पादप संरक्षण, विकास और सतत प्रबंधन के लिए केंद्रीय क्षेत्रक योजना के तहत उपलब्धियां:

क्र.सं.	समर्थित कार्यकलाप	समर्थित परियोजनाओं की संख्या	उपलब्धियां
1.	सर्वेक्षण सूचीकरण, स्व-स्थाने /बाह्य-स्थाने संरक्षण और संसाधन वृद्धि	506	• सम्मिलित क्षेत्र - 82436.87 हेक्टेयर • एमपीसीडीए की कुल संख्या - 105
2.	राष्ट्रीय / राज्य स्तर के महत्व, विद्यालय (एसएचजी) और गृह (एचएचजी) के समर्थित जड़ी-बूटी उद्यान	223	• एचजी/एसएचजी/एचएचजी की कुल संख्या - 21293 • अभियानों की कुल संख्या - 07 i. आंवला अभियान ii. मोरिंगा अभियान iii. 20-20 अभियान iv. 365 दिन अभियान v. गिलोय अभियान vi. आयुष आपके द्वार vii. एनएमपीबी ने अश्वगंधा अभियान शुरू किया है।
3.	पौधशालाओं की स्थापना	57	• औषधीय पादपों की रोपण सामग्री उगाने के हेतु
4.	संयुक्त वन प्रबंधन समितियों/पंचायतों/वन पंचायतों/जैव विविधता प्रबंधन समितियों/स्वयं सहायता समूहों को सहायता	51	• कच्ची औषधीय पादप सामग्री के मूल्यवर्धन और इन समुदायों के लिए आजीविका सृजन के लिए **1,175** जेएफएमसी/वन पंचायत/बीएमसी को समर्थन दिया।
5.	अनुसंधान एवं विकास	402	• औषधीय पादपों के विभिन्न पहलु जैसे बायोएक्टिविटी गाइडेड फ्रैक्शनेशन, कृषि तकनीकों का विकास, नर्सरी तकनीकों और खेती के तरीकों का मानकीकरण, जियो टैग डिजिटल लाइब्रेरी का प्रलेखन और विकास, विकल्प का पता लगाना, जीनोटाइप पहचान, आनुवंशिक सुधार, जीनोम अध्ययन पर समर्थित परियोजना और जर्मप्लाज्म संग्रहण और संरक्षण, इंटरक्रॉपिंग, इन-विट्रो प्रचार अध्ययन, सूक्ष्म प्रसार, रासायनिक और आणविक रूपरेखा, फाइटो-केमिकल मूल्यांकन, फसलोपरांत प्रबंधन तकनीक आदि। • आईपीआर/पेटेंट - एनएमपीबी ने अब तक 05 अनूठी परियोजनाओं की पहचान की है जो नई प्रकृति की हैं और पेटेंट योग्य हैं। आईपीआर दाखिल करने की प्रक्रिया चल रही है। • प्रकाशन: i. विगत 10 वर्षों के दौरान अनुसंधान एवं विकास

			समर्थित परियोजनाओं के तहत राष्ट्रीय और अंतर्राष्ट्रीय पत्रिकाओं में कुल 175 शोध प्रकाशन प्रकाशित किए गए हैं। ii. 104 औषधीय पादपों को सम्मिलित करते हुए कृषि तकनीकें प्रकाशित की गई हैं।
6.	सूचना, शिक्षा और संचार (आईईसी) आदि।	233	संगोष्ठियों/कार्यशालाओं/सम्मेलनों/क्रेता-विक्रेता बैठकों/ प्रशिक्षणों की संख्या - 216 • एनआरडीआर / आरआरडीआर की कुल संख्या - 05 • स्वैच्छिक प्रमाणन के लिए योजनाओं का समर्थन - 01 • प्रकाशन पर परियोजनाएं - 11 • प्रकाशन - प्रोफेसर आयुष्मान कॉमिक बुक - 3 सीरीज • औषधीय पादपों पर अंतर्राष्ट्रीय जर्नल
7.	विपणन और सूचना तकनीक	18	• औषधीय पादपों के व्यापार के लिए मंच प्रदान करने और आसान बाजार पहुंच प्रदान करने के लिए "ई-चरक" ऐप्प • भारत में औषधीय पौधों की मांग आपूर्ति के आकलन पर अध्ययन • एनएमपीबी हेल्पलाइन - एनएमपीबी ने सी डैक हैदराबाद के सहयोग से एक हेल्पलाइन विकसित की है।
9.	क्षेत्रीय-सह-सुविधा केंद्र	7	• औषधीय पादपों के 74,08,852 क्यूपीएम विकसित किए गए
	परियोजनाओं की कुल संख्या	**1497**	

*****